अध्याय –7

आत्म–परिचय, एक गीत : हरिवंश राय बच्चन

जन्म – सन् 1907 ई.
मृत्यु – सन् 2003 ई.

हालावाद के प्रवर्तक हरिवंश राय बच्चन उत्तर छायावाद काल के प्रमुख कवि रहे हैं। वे अपनी काव्य–यात्रा के प्रारम्भिक दौर में मध्ययुगीन फ़ारसी कवि उमर खय्याम के जीवन–दर्शन से बहुत प्रभावित रहे। उमर खय्याम की रुबाइयों से प्रेरित उनकी प्रसिद्ध कृति मधुशाला को कवि–मंच पर जबरदस्त लोकप्रियता मिली। कवि की विलक्षण प्रतिभा इश्क, मोहब्बत, पीड़ा जैसी रूमानियत से भरी हुई थी। वे परस्पर झगड़ने के बजाय प्यार को महत्त्व देते थे।

उनकी प्रमुख काव्य रचनाएँ हैं – मधुशाला, मधुबाला, मधुकलश, निशा निमंत्रण, एकांत संगीत, आकुल–अंतर, मिलनयामिनी, सतरंगिणी, आरती और अंगारे, नए पुराने झरोखे तथा टूटी–फूटी कड़ियाँ। इनके चार आत्मकथा खण्ड हैं– क्या भूलूँ क्या याद करूँ, नीड़ का निर्माण फिर, बसेरे से दूर तथा दशद्वार से सोपान तक। इनके द्वारा लिखित 'प्रवासी की डायरी' तथा अनुवाद ग्रंथ हैमलेट, जनगीता व मैकबेथ भी लोकप्रिय रहे।

यहाँ संगृहीत उनकी कविता आत्मपरिचय अपनी अस्मिता, अपनी पहचान का बोध कराती है। सुख–दुःख को समभाव से स्वीकारते हुए जगजीवन से जुड़े रहकर जीने में ही आनन्द है। कवि स्नेह–सुरा का पान करके अपनी मस्ती में जीवन का गान गाता है। संसार की मौजों में मस्तभाव से बहना कवि को भाता है। अपनी मस्ती में वह नित नए जग का निर्माण करता है। दीवानगी का आलम यह है कि उसे अपने रुदन में भी नये राग, नये छंद का आभास होता है। जो अपने आपको पूरी तरह पहचान लेता है उसके लिए यहाँ वहाँ सर्वत्र मस्ती ही मस्ती होती है।

आत्म–परिचय

मैं जग–जीवन का भार लिए फिरता हूँ,
फिर भी जीवन में प्यार लिए फिरता हूँ;
कर दिया किसी ने झंकृत जिनको छूकर,
मैं साँसों के दो तार लिए फिरता हूँ।

मैं स्नेह–सुरा का पान किया करता हूँ,
मैं कभी न जग का ध्यान किया करता हूँ,

जग पूछ रहा उनको, जो जग की गाते ,
मैं अपने मन का गान किया करता हूँ।

मैं निज उर के उदगार लिए फिरता हूँ,
मैं निज उर के उपहार लिए फिरता हूँ;
है यह अपूर्ण संसार न भाता मुझको,
मैं स्वप्नों का संसार लिए फिरता हूँ।

मैं जला हृदय में अग्नि, दहा करता हूँ,
सुख–दुख दोनों में मग्न रहा करता हूँ;
जग भव–सागर तरने को नाव बनाए,
मैं मन–मौजों पर मस्त बहा करता हूँ।

मैं यौवन का उन्माद लिए फिरता हूँ,
उन्मादों में अवसाद लिए फिरता हूँ,
जो मुझको बाहर हँसा, रुलाती भीतर,
मैं, हाय! किसी की याद लिए फिरता हूँ।

कर यत्न मिटे सब, सत्य किसी ने जाना?
नादान वहीं हैं, हाय, जहाँ पर दाना!
फिर मूढ़ न क्या जग, जो इस पर भी सीखे?
मैं सीख रहा हूँ, सीखा ज्ञान भुलाना।।

मैं और, और जग और, कहाँ का नाता,
मैं बना–बना कितने जग रोज़ मिटाता;
जग जिस पृथ्वी पर जोड़ा करता वैभव,
मैं प्रति पग से उस पृथ्वी को ठुकराता।

मैं निज रोदन में राग लिए फिरता हूँ,
शीतल वाणी में आग लिए फिरता हूँ,
हों जिसपर भूपों के प्रासाद निछावर,
मैं वह खँडहर का भाग लिए फिरता हूँ।

मैं रोया, इसको तुम कहते हो गाना,

मैं फूट पड़ा, तुम कहते, छंद बनाना;
क्यों कवि कहकर संसार मुझे अपनाए,
मैं दुनिया का हूँ एक नया दीवाना।

मैं दीवानों का वेश किये फिरता हूँ,
मैं मादकता निःशेष लिए फिरता हूँ;
जिसको सुनकर जग झूम उठे लहराए,
मैं मस्ती का सन्देश लिए फिरता हूँ।।

शब्दार्थ–

जग जीवन का भार – सांसारिक उत्तरदायित्व, जिम्मेदारियाँ

झंकृत – संगीत के सुर निकलना,	स्नेह–सुरा – प्रेम की शराब
पान – पीना,	उद्‌गार – भाव,
दहा – जला,	उपहार – भेंट
उन्माद –मस्ती, पागलपन	अवसाद – दुख, निराशा
वैभव – ऐश्वर्य,	राग – गीत,
प्रासाद – महल,	निछावर – परित्याग

वस्तुनिष्ठ प्रश्न–

1. 'साँसों के दो तार' प्रतीक है –

(अ) जीवन (ब) जिज्ञासा
(स) विवशता (द) उपेक्षा ( )

2. 'दिन का पंथी' में अलंकार है –

(अ) उपमा (ब) रूपक
(स) उत्प्रेक्षा (द) अनुप्रास ( )

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न–

1. कवि ने जीवन के लिए किसे आवश्यक माना है ?
2. कवि स्नेह–सुरा का पान कैसे करता है ?

लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. 'निज के उद्‌गार और उपहार' से कवि का क्या तात्पर्य है ?स्पष्ट कीजिए।
2. 'शीतल वाणी में आग' – के होने का क्या अभिप्राय है ?

3. कवि ने स्वयं को दीवाना क्यों कहा है ?

4. 'मैं निज रोदन में राग लिए फिरता हूँ'' कहने से कवि का क्या आशय है ?

व्याख्यात्मक प्रश्न –

1. ''मैं निज रोदन में राग लिए फिरता हूँ ..... भाग लिए फिरता हूँ।'' प्रस्तुत पद की व्याख्या करो।

2. ''मैं दीवानों का ..... लिए फिरता हूँ।'' प्रस्तुत पद की व्याख्या करो।

* * * * *